संधि contd.

41. अन्तादिवच्च - 6|1|85

यह अतिदेश सूत्र है। (जिस सूत्र से समानता के आधार पर कार्य होता है, उसे अतिदेश कहते हैं। यह पूर्व के सूत्रों की समानता को स्पष्ट करता है।) अर्थात् एकादेश करने से पहले पूर्वसमुदाय या परसमुदाय में जो धातु - प्रातिपदिकत्व, सुबन्तत्व - निपातत्व आदि व्यवहार होते हैं वे भी एकादेश युक्त में भी होते हैं। यथा - 'आ + इहि' में गुण एकादेश होने से पहले 'आ' जो है उसका विशिष्ट एकादेश 'ए' में भी माना जाएगा। अतः - 'शिव + एहि' की स्थिति में 'ओमाङोश्च' से पररूप होने पर 'शिवेहि' रूप सिद्ध हुआ। यह 'अकः सवर्णे दीर्घः' का अपवाद है।

42. अकः सवर्णे दीर्घः - 6|1|110.

यह विधिसूत्र है। सूत्र का अर्थ है यदि 'अक्' (अइउण्, ऋऌक्) के पर समान स्वर वर्ण 'अच्' (अइउण, ऋऌक, एओङ, ऐऔच्) तो पूर्व एवं पर वर्ण के स्थान में दीर्घ एकादेश होता है।

यथा - दैत्य + अरिः - दैत्यारिः - 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से अ + अ के परे अहोने 'आ' दीर्घ एकादेश हुआ।

(b) श्रीशः - श्री + ईशः, (c) विष्णु + उदयः - विष्णूदयः,

(d) होतृकारः - होतृ + ऋकारः - Same as दैत्यारिः।

43. एङः पदान्तादति - 6|1|109.

यह विधिसूत्र है। सूत्र का अर्थ है - यदि 'एङ्' 'एओङ्' के पर 'अ' हो तो उसका पूर्वरूप एकादेश हो जाता है।

यथा - हरेऽव - हरे + अव - 'एङः पदान्तादति' सूत्रानुसार ए + अ = हरेऽव रूप बना।

(b) विष्णोऽव - विष्णो + अव - Same as 'हरेऽव'

Scanned with CamScanner

44. सर्वत्र विभाषा गोः - 6|1|122

यह विधि सूत्र है। सूत्र का अर्थ है यदि पद के अन्त में एङन्त (ए ओङ्) 'गो' शब्द के पर 'अ' हो तो उसका विकल्प से प्रकृतिभाव होता है। (अर्थात् प्रयोग में कोई संधि नहीं होती, वैसे ही मूल स्वरूप में रह जाता है। ये प्रयोग लौकिक और वैदिक सर्वत्र पाया जाता है।) यथा - गो अग्रम् एवं गोऽग्रम। 'एङः पदान्तादति' से विकल्प पक्ष में 'गोऽग्रम्' रूप बना।

45. 'अनेकाल् शित् सर्वस्य' - 1|1|55

यह परिभाषा सूत्र है। सूत्र का ~~सूत्र~~ अर्थ है यदि (अल्' (स्वर + व्यञ्जन - 'अइउण् - हल्' तक) का प्रयोग एकानेक हो तथा आदेश 'श' की इत् संज्ञा (लोप) हुई हो तो वह आदेश पूर्णतया 'स्थानी' होता है। यथा - देवैः रूप में देव + भिस् (ऐस् - आदेश होता है)।

फलानि - फल + जस् विभक्ति - जस् के स्थान में 'शि' आदेश होता है। यहाँ 'शि' के 'श' की इत्संज्ञा होती है अतः यह आदेश पूर्णतया 'जस्' के स्थान पर होता है। और 'फलानि' रूप बनता है। यह सूत्र 'अलोऽन्त्यस्य' का अपवाद सूत्र है।

46. 'ङिच्च' - 1|1|53

यह परिभाषा सूत्र है। यदि 'ङकार' की इत्संज्ञा होती है तो वहाँ अनेक 'अल्' होने पर भी अन्त्य 'अल्' के स्थान पर ही एकादेश होता है।

यह सूत्र 'अनेकाल् शित् सर्वस्य' का अपवाद सूत्र है।

Hema Pathak
Deptt. of Skt.
B.A. Ist + III yr

Scanned with CamScanner